No of Questions : 30

No of Pages : 5

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

हिन्दी

मॉडल पेपर 10

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

कार्य-कुशलता क्या है और कार्य-कुशल व्यक्ति कौन है, उसकी हम यहाँ पर विवेचना कर लें। कार्य-कुशलता का पहला अंग तो यह है कि हम अपने कार्य को समय से निर्धारित कर उसे अच्छी तरह जानें। हम लोगों में अधिकतर लोग कार्य उठा तो लेते हैं, पर उसे अच्छी तरह जानते नहीं और न जानने +का यत्न ही करते हैं। जब सफलता नहीं मिलती तो अपने को दोष न देकर हम दूसरे को दोष देते हैं, अपना हृदय कलुषित करते हैं और बार-बार कार्य बदलते हुए बड़े संताप में जीवन व्यतीत करते हैं। छोटे-बड़े सभी कामों में यह देखा जाता है। हम लोगों में से अधिकतर लोग जो काम करते हैं उसकी एक-एक तफ़सील पर ध्यान नहीं देते और न उसमें पूरे तौर से योग्यता और निपुणता प्राप्त करने का यत्न करते हैं। इसी से हमारा काम पूरा नहीं होता, और हमारे हाथ से सब काम निकलते जाने का यही कारण है कि दूसरे लोग उसी काम को ज़्यादा अच्छी तरह करते हैं और हम स्वयं उनके काम को अपने काम से ज़्यादा पसंद करने लगते हैं। यदि हम लोग अपने-अपने काम के एक-एक अंग को अच्छी तरह समझें और उसमें प्रवीण होने का सदा ख्याल रखें तो हम अपनी और अपने काम, दोनों की बहुत-कुछ वृद्धि और उन्नति कर सकते हैं। कार्य-कुशलता छोटे और बड़े का भेद नहीं जानती।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

2. कार्य-कुशलता का पहला अंग क्या है? 1

3. लोग प्रायः बार-बार अपना कार्य क्यों बदलते रहते हैं? 2

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

सच है, मनुज बड़ा पापी है, नर का वध करता है।
पर, भूलो मत, मानव के हित मानव ही मरता है।।
लोभ, द्रोह, प्रतिशोध, वैर, नरता के विघ्न अमित हैं।
तप, बलिदान, त्याग के सम्बल भी न किन्तु परिमित हैं।।
मत सोचो दिन रात पाप में मनुज निरत होता है।
हाय, पाप के बाद वही तो पछताता रोता है।।
यह क्रन्दन, यह अश्रु मनुज की आशा बहुत बड़ी है।
बतलाता है, यह मनुष्यता अब तक नहीं मरी है।।
नहीं एक अवलम्ब, जगत का आभा पुण्यव्रती की।
तिमिर व्यूह में फँसी किरण भी आशा है धरती की।।

4. उपर्युक्त पद्यांश में **नरता** के कौन–कौन से विघ्न माने गये हैं? 1

5. उपर्युक्त पद्यांश में **यह क्रन्दन, यह अश्रु ...** पंक्ति में किस प्रकार के आँसुओं की बात कही गयी है? 1

6. उक्त पद्यांश में **मानव के हित मानव ही मरता है** का भावार्थ क्या है? 2

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. समय का सदुपयोग
   (क) प्रस्तावना
   (ख) समय का सही उपयोग
   (ग) समय को खोना अपूरणीय हानि
   (घ) समय सत्य–पथ–प्रदर्शक
   (ड़) उपसंहार
2. रक्षाबन्धन
   (क) प्रस्तावना
   (ख) इतिहास
   (ग) मनाने की विधि
   (घ) प्रेम का प्रतीक
   (ड़) धार्मिक महत्त्व
   (च) उपसंहार
3. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम
   (क) कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर कदम
   (ख) कैशलेस अर्थव्यवस्था के लाभ
   (ग) कैशलेस अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ
   (घ) उपसंहार
4. विद्यार्थी–जीवन में अनुशासन
   (क) अनुशासन का अर्थ
   (ख) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता

(ग) विद्यालयों एवं कॉलेजों में अनुशासन की स्थिति
(घ) विद्यार्थी के जीवन–निर्माण में अनुशासन का प्रभाव
(ङ) उपसंहार

8. अपने को रामपुर निवासी रमन मानते हुए जिला चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए। पत्र में आपके गाँव में अतिवृष्टि के कारण फैल रही मौसमी बीमारियों की रोकथाम का निवेदन हो। 4

अथवा

8. स्वयं को जयपुर का पुस्तक विक्रेता रतन कुमार मानते हुए गीताप्रेस, गोरखपुर को एक पत्र लिखिए, जिसमें धार्मिक पुस्तकें खरीदने की माँग हो।

खण्ड–स

9. एककर्मक क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए। 2

10. कर्मवाच्य किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइये। 3

11. सेना नायक सामासिक पद में समास का नाम बताइए और समास–विग्रह भी कीजिए। 2

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. मेरे पास अनेकों पुस्तकें हैं।
2. वह लड़के काम समाप्त करके चले गए।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. आस्था हिलना।
2. पर्दाफाश करना।

14. **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है–** लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

कितना प्रामाणिक था उसका दुःख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुःख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तर्कों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं।
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की–जैसी दिखाई मत देना।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6
ऐसा लगता है कि किसी जिज्ञासु व्यक्ति ने दादू से सीधा सवाल पूछा था कि आपका खाना–पीना कैसे चलता है? आप अपने परिवार का भरण–पोषण कैसे करते हैं? अर्थात् आपकी आय के साधन क्या हैं? यहाँ तो चारों ओर अभाव ही अभाव दिखाई दे रहा है। इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए दादू ने कहा था कि राम ही मेरा रोजगार है, वहीं मेरी सम्पत्ति है, उसी राम के प्रसाद से परिवार का पोषण हो रहा है। इन पंक्तियों से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि यहाँ ऐश्वर्य का बोलबाला नहीं, गरीबी का साम्राज्य है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
दादू इतने शांत स्वभाव के थे कि किसी विवाद में उलझे ही नहीं। निंदा–स्तुति को उन्होंने समभाव से ग्रहण कर लिया था। उनके शिष्य हिन्दू और मुसलमान दोनों थे।
उन्होंने अपने आचरण और उपदेशों द्वारा पूरी मानवता के लिए एक समान पथ का आविष्कार किया। उन्होंने अपने विरोधियों से बहस कम की और समर्थकों को सलाह ज्यादा दी हैं।

17. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना कहाँ तक उचित है? समझाइये। 6

अथवा

17. लड़की की विदाई के क्षण माँ के लिए ही विशेषतः अधिक दुःखद क्यों होती हैं? **कन्यादान** कविता के आलोक में उत्तर दीजिए।

18. लेखक द्वारा किये गये सूर्यास्त के चित्रण को अपने शब्दों में लिखिए। 6

अथवा

18. भारतीय राष्ट्रीय जीवन में कन्याकुमारी का क्या महत्व हैं? लिखिए।

19. **दारून तरनि तरै नदी सुख पावै सब, सीरी घन छाँह चाहिबौई चित्त धर्‌यौ है** इन पंक्तियों में ग्रीष्म ऋतु के प्रचण्ड ताप से बचने के लिए लोगों के किस आचरण का वर्ण किया गया हैं? 2

20. नदियाँ किस धुन में निरन्तर निनाद करती रहती हैं? 2

21. पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की 2
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की,
इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभर कर आ रही है, उसे शब्दबद्ध कीजिए।

22. शिक्षा–सुधार की दृष्टि से आप शिक्षा–प्रणाली में मुख्य रूप से क्या परिवर्तन करना चाहेंगे? 2

23. दादू के निन्दा–स्तुति के विषय में क्या विचार थे? 2

24. दस वर्ष से कम आयु के बच्चों को वाहन में यात्रा करते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए? 2

25. माँ ने लड़की को कैसा नहीं दिखने के लिए कहा हैं? 1

26. लड़की को धुँधले प्रकाश की पाठिका क्यों कहा गया हैं? 1

27. शराब पीकर कौन गाड़ी चला रहा था? 1

28. भारतेन्दु जी ने किन पत्रिकाओं का सम्पादन किया था? 1

29. **तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।** कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के विषय में यह क्यों कहा हैं? 4

30. महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

□□□□□□□□

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर–10

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

कार्य–कुशलता क्या है और कार्य–कुशल व्यक्ति कौन है, उसकी हम यहाँ पर विवेचना कर लें। कार्य–कुशलता का पहला अंग तो यह है कि हम अपने कार्य को समय से निर्धारित कर उसे अच्छी तरह जानें। हम लोगों में अधिकतर लोग कार्य उठा तो लेते हैं, पर उसे अच्छी तरह जानते नहीं और न जानने का प्रयत्न ही करते हैं। जब सफलता नहीं मिलती तो अपने को दोष न देकर हम दूसरे को दोष देते हैं, अपना हृदय कलुषित करते हैं और बार–बार कार्य बदलते हुए बड़े संताप में जीवन व्यतीत करते हैं। छोटे–बड़े सभी कामों में यह देखा जाता है। हम लोगों में से अधिकतर लोग जो काम करते हैं उसकी एक–एक तफ़सील पर ध्यान नहीं देते और न उसमें पूरे तौर से योग्यता और निपुणता प्राप्त करने का यत्न करते हैं। इसी से हमारा काम पूरा नहीं होता, और हमारे हाथ से सब काम निकलते जाने का यही कारण है कि दूसरे लोग उसी काम को ज़्यादा अच्छी तरह करते हैं और हम स्वयं उनके काम को अपने काम से ज़्यादा पसंद करने लगते हैं। यदि हम लोग अपने–अपने काम के एक–एक अंग को अच्छी तरह समझें और उसमें प्रवीण होने का सदा ख्याल रखें तो हम अपनी और अपने काम, दोनों की बहुत–कुछ वृद्धि और उन्नति कर सकते हैं। कार्य–कुशलता छोटे और बड़े का भेद नहीं जानती।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
गद्यांश का उचित शीर्षक– कार्य कुशलता।

2. कार्य–कुशलता का पहला अंग क्या है? 1

उत्तर :
कार्य–कुशलता का पहला अंग है कार्य को अच्छी तरह जानना।

3. लोग प्रायः बार–बार अपना कार्य क्यों बदलते रहते हैं? 2

उत्तर :
जब उन्हें कार्य में सफलता नहीं मिलती तो वे बार–बार अपना कार्य बदलते हैं।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

सच है, मनुज बड़ा पापी है, नर का वध करता है।
पर, भूलो मत, मानव के हित मानव ही मरता है।।
लोभ, द्रोह, प्रतिशोध, वैर, नरता के विघ्न अमित हैं।
तप, बलिदान, त्याग के सम्बल भी न किन्तु परिमित हैं।।
मत सोचो दिन रात पाप में मनुज निरत होता है।
हाय, पाप के बाद वही तो पछताता रोता है।।
यह क्रन्दन, यह अश्रु मनुज की आशा बहुत बड़ी है।
बतलाता है, यह मनुष्यता अब तक नहीं मरी है।।
नहीं एक अवलम्ब, जगत का आभा पुण्यव्रती की।
तिमिर व्यूह में फँसी किरण भी आशा है धरती की।।

4. उपर्युक्त पद्यांश में **नरता** के कौन–कौन से विघ्न माने गये हैं? 1

उत्तर :
उपर्युक्त पद्यांश में **नरता** के चार विघ्न माने गये हैं वैर, प्रतिशोध, द्रोह, लोभ

5. उपर्युक्त पद्यांश में **यह क्रन्दन, यह अश्रु ...** पंक्ति में किस प्रकार के आँसुओं की बात कही गयी है? 1

उत्तर :
पश्चात्ताप के आँसूओं की बात कही गयी है।

6. उक्त पद्यांश में **मानव के हित मानव ही मरता है** का भावार्थ क्या है? 2

उत्तर :
उक्त पद्यांश का भावर्थ है, **मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है।**

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. समय का सदुपयोग
   (क) प्रस्तावना
   (ख) समय का सही उपयोग
   (ग) समय को खोना अपूरणीय हानि
   (घ) समय सत्य–पथ–प्रदर्शक
   (ड़) उपसंहार
2. रक्षाबन्धन
   (क) प्रस्तावना
   (ख) इतिहास
   (ग) मनाने की विधि
   (घ) प्रेम का प्रतीक
   (ड़) धार्मिक महत्त्व
   (च) उपसंहार
3. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम
   (क) कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर कदम
   (ख) कैशलेस अर्थव्यवस्था के लाभ
   (ग) कैशलेस अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ
   (घ) उपसंहार
4. विद्यार्थी–जीवन में अनुशासन
   (क) अनुशासन का अर्थ
   (ख) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता
   (ग) विद्यालयों एवं कॉलेजों में अनुशासन की स्थिति
   (घ) विद्यार्थी के जीवन–निर्माण में अनुशासन का प्रभाव
   (ड़) उपसंहार

उत्तर :

1. समय का सदुपयोग

(क) **प्रस्तावना –** समय अनमोल धन है। कुछ लोग चरित्र को सबसे बड़ा धन मानते हैं। महाकवि तुलसीदास ने सन्तोष को सबसे बड़ा धन माना है। अंग्रेजी की एक कहावत में कहा गया है **टाइम इज मनी** अर्थात् समय ही धन है। इसी प्रकार यदि पूछा जाए कि सबसे बड़ी हानि क्या है तो उत्तर होगा कि समय व्यर्थ गंवा देना ही सबसे बड़ी हानि है। मानव जीवन का एक–एक क्षण महत्वपूर्ण है। बीता समय कभी लौटकर नहीं आता।

(ख) **समय का सही उपयोग –** समय का उचित प्रयोग करने के लिए बालक को बचपन से ही ऐसी आदतें डालनी चाहिएँ, जिससे वह निश्चित समय के अनुसार प्रत्येक कार्य को करें। उसका दैनिक कार्य अनेक भागों में विभाजित होना चाहिए। निश्चित समय पर स्कूल जाना, पढ़ना, खेलना, सैर करना, भोजन करना, सोना आदि समय के अनुसार होना चाहिए। अतः अच्छे गुण एवं संस्कारों के लिए समय का सदुपयोग करना चाहिए, क्योंकि संसार में जितने भी महापुरूष एवं मेधावी हुए हैं, उन्होंने समय का सदुपयोग बुद्धिमत्तापूर्वक किया। नेपोलियन तथा पण्डित नेहरू इसका दृष्टान्त हैं।

(ग) **समय को खोना अपूरणीय हानि –** आदि गुरू शंकराचार्य ने कहा है कि समय को व्यर्थ गंवा देना एक ऐसी हानि होती है जो कभी पूर्ण नहीं होती। बुरे कार्यों में, निद्रा, लड़ाई–झगड़ों में समय की बर्बादी करना, मूर्खता की निशानी है। **समय काटे नहीं कटता, कोई काम ही नहीं है करने के लिए** आदि सोचना मन की मूर्खता ही है। खाली रहना विवेकहीनता दर्शाता हैं।

(घ) **समय सत्य–पथ–प्रदर्शक –** समय सत्य का मार्ग बताने वाला है। समय की पाबन्दी सुशीलता का चिह्न है। कल का काम आज ही पूरा करना यशस्वी बनने का साधन है। समय का उचित प्रयोग समय की बचत है, सफलता की कुँजी है। जो लोग समय का उचित उपयोग करते हैं वे जीवन में सदैव सफल होते हैं। इसीलिए कहा भी गया है–

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

(ड़) **उपसंहार –** सार रूप में कहा जा सकता है कि समय अनमोल धन है। समय से एक क्षण देरी से गाड़ी छूट जाती है। किसान द्वारा बोया गया अन्न समय पर ही उगता है। समय चूक जाने पर वह कितनी मेहनत करे अन्न नहीं उगेगा। अतः हर काम समय पर करना चाहिए।

2. रक्षाबन्धन

(क) **प्रस्तावना –** रक्षा–बन्धन भारत का पवित्र एवं प्रमुख त्योहार है। यह भारतीय लोक जीवन की सुन्दर परम्परा है। यह पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। प्राचीन आश्रमों में स्वाध्याय के लिए यज्ञ और ऋषियों के लिए तर्पण कर्म करने के कारण इसका **उपाकर्म** नाम पड़ा। यज्ञ के बाद **रक्षा–सूत्र** बाँधने की प्रथा के कारण इसका नाम **रक्षा–बन्धन** लोक–प्रसिद्ध हो गया। संस्कृत शब्द रक्षा का हिन्दी रूप ही **राखी** है, इसलिए कुछ लोग इसे राखी का त्योहार भी कहते हैं।

(ख) **इतिहास –** रक्षा–बन्धन पर्व के रूप में कब प्रारम्भ हुआ इस सम्बन्ध में कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। कहा जाता है कि एक बार देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध हुआ था। युद्ध में देवताओं का पक्ष कमजोर पड़ता जा रहा था। तब इन्द्र की पत्नी ने अपनी पति की मंगल कामना हेतु उन्हें राखी बाँधकर युद्ध में भेजा था। राखी के प्रभाव से युद्ध में इन्द्र की विजय हुई। तब से राखी के त्योहार के महत्व को स्वीकार किया जाने लगा।

मुसलमानों के शासनकाल में यवन सुन्दर कन्याओं को उठा लेते थे। इस कठिनाई से बचने के लिए कन्याएँ बलवान राजा को एक धागा भेजकर अपना भाई बना लेती थीं। इस प्रकार से वे अपनी मान–मर्यादा की रक्षा करती थीं। मेवाड़ की रानी कर्मवती ने भी हुमायूँ को ऐसे ही राखी भेजकर भाई बनाया था।

(ग) **मनाने की विधि –** आज बहन या धर्म–बहन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसके हाथ पर राखी बाँधती है। भाई बहन से राखी बँधवाकर उसकी रक्षा का वचन देता है। कुछ लोग इस अवसर पर पूजा–अर्चना भी करते हैं। इस अवसर पर भाई अपनी बहन को स्नेह के रूप में वस्त्र और धन भी देता हैं।

(घ) **प्रेम का प्रतीक –** रक्षा–बन्धन वस्तुतः भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक है। यह सामाजिक कल्याण का सूत्र एवं बहन के निश्छल, सरल और पवित्र स्नेह का प्रतीक है–

कच्चे धागों में बहनों का प्यार हैं।
देखो, राखी का आया त्योहार है।।

बहन के अतिरिक्त ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बांधने

हैं। ब्राह्मण अपने यजमान को आशीर्वाद भी देता है। बदले में यजमान ब्राह्मण को दक्षिणा देता है।

(ङ) **धार्मिक महत्त्व –** धार्मिक क्षेत्र में रक्षा–बन्धन का महत्व कई प्रकार से माना जाता है। इसी पवित्र दिन भगवान् विष्णु को वामन अवतार के रूप में दानव राजा बलि को तीन पग भूमि माँगने का सारा राज्य दान करना पड़ा। इस महान् त्याग की स्मृति बनकर यह शुभ त्योहार आता है। दान–पुण्य के कारण ब्राह्मणों के लिए यह त्योहार और भी महत्वपूर्ण बन जाता हैं।

(च) **उपसंहार – रक्षा–बन्धन** पर्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कुछ भी रही हो परंतु आज यह त्योहार भाई–बहन के पवित्र त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस त्योहार से हमें समाज कल्याण एवं समाज–रक्षा की प्रेरणा मिलती है। हमें न केवल अपनी बहन की रक्षा करनी चाहिए, अपितु समाज के हर कमजोर व्यक्ति की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य बनता है ।

3. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम

(क) **कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर कदम –** भारतीय अर्थव्यवस्था में **कैशलेस** शब्द उस समय अचानक सम्पूर्ण देश में चर्चा में आ गया जब 8 नवम्बर, 2016 को भारत सरकार ने ₹500 व ₹1000 के नोटों की वैधता को निरस्त करने की घोषणा की। अचानक हुए नोटबन्दी से अर्थव्यवस्था की लगभग 86 प्रतिशत मुद्रा अवैध घोषित हो गई जिससे नकदी का संकट उत्पन्न होना स्वाभाविक था, ऐसे में कैशलेस अर्थव्यवस्था की अवधारणा एक महत्त्वपूर्ण विकल्प बनकर सामने आया। कैशलेस अर्थव्यवस्था का तात्पर्य लेन–देन हेतु नकद के स्थान पर उसके विकल्प **डिजिटल मनी** अर्थात् डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, पेटीएम या अन्य माध्यमों का प्रयोग करने से है।

(ख) **कैशलेस अर्थव्यवस्था के लाभ –** कैशलेस अर्थव्यवस्था से कई लाभ हैं जिसका अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ये लाभ निम्न हैं–

1. कैशलेस से सभी लेन–देनों में पारदर्शिता आती है।
2. इससे अर्थव्यवस्था में काले धन पर प्रभावी नियन्त्रण सम्भव है, क्योंकि इससे आर्थिक लेन–देनों का विवरण पता चल जाता है।
3. इससे नकद लेकर चलने से जुड़ी समस्याओं से मुक्ति मिलती है।
4. इससे अर्थव्यवस्था में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।
5. कैशलेस अर्थव्यवस्था बनने से अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ने से कर आधार एवं कर संग्रह में वृद्धि होगी।
6. कैशलेस से बैंकिंग के साथ ही सम्पूर्ण वित्तीय तन्त्र में परिचालन लागत में कमी आएगी।
7. कैशलेस व्यवस्था से उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में बढ़ोतरी संभव है।

(ग) **कैशलेस अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ –** कैशलेस अर्थव्यवस्था के अनेक लाभ है किन्तु भारत जैसे विकासशील देश में अर्थव्यवस्था को कैशलेस करना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है। यहाँ प्रमुख चुनौतियाँ निम्न हैं–

1. हमारे देश में जनसंख्या का एक बड़ा भाग बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ा हुआ नहरूहीं है, यह एक बड़ी चुनौती है।
2. भारत की एक–चौथाई जनसंख्या निरक्षर है, अतः यहाँ कैशलेस अर्थव्यवस्था की बात करना एक तरीके से बेईमानी है।
3. देश की अधिकतर जनसंख्या गाँवों में रहती है। यहाँ अभी तक आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि ही उपलब्ध नहीं है, वहाँ कैशलेस के विषय में सोचना भी अर्थहीन प्रतीत होता है।
4. भारत डिजिटल सुरक्षा के मामले में अभी भी अत्यंत पीछे है जिस कारण निजी सूचनाओं एवं डेटा के चोरी का डर बना रहता है। अतः लोग कैशलेस लेन–देन को लेकर आशंकित रहते हैं।
5. देश में कई जगहों पर इन्टरनेट सुविधा नहीं है या स्पीड बहुत कम है।

(घ) **उपसंहार –** भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ अभी तक आधारभूत सुविधाएँ भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है, अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है तथा लगभग एक–चौथाई जनसंख्या निर्धनता रेखा से नीचे है, वहाँ कैशलेस अर्थव्यवस्था की कल्पना करना इतनी जल्दी सम्भव नहीं। हमें पहले आधार बनाना होगा तथा फिर लोगों को इसके लिए तैयार करना होगा। साथ ही हमारे जैसे देश में अनेक कठिनाईयों का समाधान केवल कैशलेस से ही सम्भव नहीं हमें अन्य कई कदम उठाने होंगे, कैशलेस उनका एक अंग मात्र है।

4. विद्यार्थी–जीवन में अनुशासन

(क) **अनुशासन का अर्थ –** अनुशासन को हम दूसरे शब्दों में संयम की संज्ञा दे सकते हैं। अनुशासन शब्द **अनु** व **शासन** इन दो शब्दों के जोड़ से बना है। अनु का अर्थ है, पीछे या अनुकरण तथा शासन का अर्थ है– व्यवस्था, नियन्त्रण अथवा संयम। इस प्रकार अनुशासन का शाब्दिक अर्थ हुआ नियन्त्रण एवं संयमपूर्वक रहना।

(ख) **विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता –** विद्यार्थी जीवन में नये संस्कार और आचरण एक नींव की तरह विद्यार्थी के मन को प्रभावित करते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी जिस प्रकार का आचरण एवं व्यवहार सीख लेता है, वही आचरण व व्यवहार उसके भविष्य के जीवन का अंग बन जाता है। विद्यार्थी के सुकोमल मस्तिष्क पर अनुशासन विद्यार्थी जीवन का एक मुख्य अंग है। विद्यार्थी के चरित्र–निर्माण तथा शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अनुशासन का होना एक अनिवार्य शर्त है। अनुशासनप्रिय छात्र ही परिश्रमी व कर्त्तव्यपरायण और विनयशील हो सकता है तथा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। अतः विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की अत्यंत आवश्यकता है।

(ग) **विद्यालयों एवं कॉलेजों में अनुशासन की स्थिति –** वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कुप्रभाव से विद्यालयों व कॉलेजों में अनुशासन की स्थिति सभी जगह अच्छी नही कही जा सकती है। इसके विभिन्न कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण तो यह है कि विद्यालयों और कॉलेजों में गुरु–शिष्य परम्परा लगभग समाप्त हो गयी है, फिर संरक्षकों अथवा अभिभावकों की उदासीनता, भ्रष्ट राजनीति का कुप्रभाव, पाश्चात्यानुकरण की दुष्प्रवृत्ति और समाज का दूषित वातावरण आदि अनेक बातों के कारण भी विद्यालयों व कॉलेजों के विद्यार्थियों के बीच अनुशासनहीनता की स्थिति देखी जा सकती है। अतः यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि आज हमारे

विद्यालयों व कॉलेजों में अनुशासन की स्थिति अच्छी नहीं है।

(घ) **विद्यार्थी के जीवन-निर्माण में अनुशासन का प्रभाव –** प्रकृति का चक्र जिस प्रकार सूर्य का निश्चित समय पर उदय-अस्त होना, वृक्षों के पत्तों का निकलना- झड़ना, वर्षा, सर्दी, गर्मी का समय पर आना-जाना आदि सभी कार्य एक अनुशासन के तहत् नियमानुसार सम्पादित होते रहते है, उसी प्रकार विद्यार्थी के जीवन-निर्माण में अनुशासन का प्रभाव स्वयं-सिद्ध है। विद्यार्थी काल वह समय है जब जीवन के श्रेष्ठ संस्कारों की नींव रखी जाती है, यदि नींव ही कच्ची हुई तो सम्पूर्ण जीवन ही ढुलमुल हो जायेगा और परिणामतः केवल असफलता ही हाथ लगेगी। अतः विद्यार्थी के जीवन-निर्माण में अनुशासन का मुख्य स्थान है।

(ड़) **उपसंहार –** अनुशासन एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसे अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन सफल बना सकता है। इससे विभिन्न श्रेष्ठ गुणों का विकास होता है। अनुशासित रहकर छात्र अपनी और राष्ट्र की प्रगति कर सकता है। अतः विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन अत्यावश्यक है।

8. अपने को रामपुर निवासी रमन मानते हुए जिला चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए। पत्र में आपके गाँव में अतिवृष्टि के कारण फैल रही मौसमी बीमारियों की रोकथाम का निवेदन हो। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,
जिला चिकित्सा अधिकारी,
जिला क, ख, ग,
रामपुर।

विषयः रामपुर गाँव में मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए निवेदन-पत्र।

महोदय,

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि मैं आपके जिलान्तर्गत रामपुर गाँव का निवासी हूँ। पिछले सप्ताह हमारे गाँव और जिले के अनेक स्थानों पर भारी अतिवृष्टि हुई हैं, जिसके कारण जन-जीवन प्रभावित हुआ है। अतिवृष्टि के कारण अनेक मौसमी बीमारियाँ, जैसे-सर्दी, जुकाम, खाँसी, पेट दर्द, पेचिश, मलेरिया आदि फैल रही हैं। गाँव में अनेक लोग इन बीमारियों के संक्रमण से प्रभावित हुए हैं और हो रहे हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि रामपुर गाँव में कुशल चिकित्सकों की टीम भेजकर मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए समुचित व्यवस्था अतिशीघ्र करने की कृपा करें।

हम सब गाँववासी इस कृपा के लिए सदैव आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद!

प्रार्थी
रमन
दिनांक : 05 जनवरी, 2019 निवासी-रामपुर गाँव

अथवा

8. स्वयं को जयपुर का पुस्तक विक्रेता रतन कुमार मानते हुए गीताप्रेस, गोरखपुर को एक पत्र लिखिए, जिसमें धार्मिक पुस्तकें खरीदने की माँग हो।

उत्तर :

रतन कुमार,
पुस्तक विक्रेता,
जयपुर। दिनांक : 02 फरवरी, 2019

श्रीमान् प्रबंध संचालक,
गीताप्रेस, गोरखपुर।

प्रिय महोदय,

हम पिछले दस वर्षों से पुस्तक विक्रय का कार्य कर रहे हैं। इस माह हमने आपके द्वारा प्रकाशित धार्मिक पुस्तकों का भी विक्रय का निर्णय लिया है। निवेदन है कि निम्नलिखित पुस्तकें अतिशीघ्र रेल द्वारा भेजने का प्रबन्ध करें-

1. श्री रामचरितमानस ग्रन्थाकार (हिन्दी टीका सहित) 50 प्रति.
2. श्री रामचरितमानस-मँझला (केवल मूल) 50 प्रति.
3. श्री मद्भगवतगीता-महात्म्य सहित, मोटे अक्षरों में (हिन्दी टीका सहित) 50 प्रति.
4. श्रीमद् भगवतगीता-तत्व विवेचनी हिन्दी टीका 50 प्रति.
5. सुन्दरकाण्ड-मूल 50 प्रति.
6. श्री हनुमानचालीसा मूल 100 प्रति

कृपया नियमानुसार व्यापारिक छूट प्रदान करें तथा कर्मचारियों को सावधान करने की कृपा कीजिएगा कि वे पुस्तकें देखभाल कर ही पैकिंग करें।

सधन्यवाद! शुभाकांक्षी

रतन कुमार,
पुस्तक विक्रेता।

सधन्यवाद!

शुभाकांक्षी,
कृते राजस्थान
बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स।

खण्ड-स

9. एककर्मक क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए। 2

उत्तर :

जिस वाक्य में एक ही कर्म हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- सत्यजीत पतंग उड़ाता है।

10. कर्मवाच्य किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइये। 3

उत्तर :

कर्मवाच्य का अर्थ- जिन वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती हैं, उन्हें कर्मवाच्य कहा जाता हैं। इन वाक्यों में क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्म के साथ होता है। कर्मवाच्य में क्रियायें कर्म के अनुसार ही होती है। उदाहरण के लिए- नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती हैं।

11. सेना नायक सामासिक पद में समास का नाम बताइए और समास-विग्रह भी कीजिए। 2

उत्तर :

1. समास का नाम- तत्पुरूष।
2. समास-विग्रह- सेना का नायक।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. मेरे पास अनेकों पुस्तकें हैं।
2. वह लड़के काम समाप्त करके चले गए।

उत्तर :

1. मेरे पास अनेक पुस्तकें हैं।
2. वे लड़के काम समाप्त करके चले गए।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. आस्था हिलना।
2. पर्दाफाश करना।

उत्तर :

1. **आस्था हिलना** (विश्वास उठना)– वर्तमान में सच्चाई और ईमानदारी के प्रति लोगों की आस्था हिलने लगी है।
2. **पर्दाफाश करना** (सच्चाई सामने लाना)– सेना के जवानों ने आतंकवादियों का पर्दाफाश कर दिया।

14. **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है–** लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है इस लोकोक्ति का अर्थ है– एक बुरे के कारण सब बुरे बन जाते हैं

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

कितना प्रामाणिक था उसका दुःख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुःख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तर्कों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।

उत्तर :

प्रंसग– प्रस्तुत पद्यांश कवि ऋतुराज द्वारा रचित **कन्यादान** कविता से लिया गया है। इसमें विवाह के समय पुत्री को माँ द्वारा दी जा रही सीख का वर्णन किया गया हैं।

व्याख्या– कवि वर्णन करता हैं कि कन्यादान करते समय कन्या की माँ का दुःख प्रमाणों से सिद्ध, सच्चा और वास्तविक था, क्योंकि वह कन्या ही उसकी एकमात्र पूँजी थी तथा उसी से वह अपना दुःख सुख बाँटती थी। जिस लड़की का वह कन्यादान कर रही थी, वह लड़की अभी पूरी समझदार नहीं हो पायी थी। अर्थात् न तो शारीरिक दृष्टि से वह विवाह के योग्य थी और न उसे अच्छे–बुरे की सही व पूरी समझ थी। अभी वह इतनी भोली और सरल थी कि उसे विवाह होने पर मिलने वाले सुखों का कुछ–कुछ अहसास था, परन्तु वैवाहिक जीवन के कष्टों और दुःखों का उसे पूर्ण ज्ञान नहीं था। उसे सुख में छिपे दुखों की पूरी समझ नहीं थी। उसे तो वैवाहिक जीवन के एक अस्पष्ट से प्रकाश का एवं अनदेखे–अनभोगे सुख का अहसास था। अर्थात् उसके सामने वैवाहिक जीवन के सुखों का स्वरूप अस्पष्ट एवं मधुर कल्पनाओं से परिपूर्ण था, जिस कारण वह सुख जानने की कुछ कोशिश कर रही थी, उसे वैवाहिक जीवन को कुछ तर्कों के आधार पर कुछ सुखमय होने का आभास हो रहा था।

विशेष–

1. वैवाहिक जीवन में मिलने वाले कष्टों एवं दुःखों की उस कन्या को पूरी समझ नहीं थी। उसे सुखमय जीवन का अस्पष्ट आभास था। इसी कारण उसे **धुँधले प्रकाश की पाठिका** कहा गया हैं।
2. सरल एवं प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग हुआ है। स्वभावोक्ति एवं उत्प्रेक्षा अंलकार प्रयुक्त हैं।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं।
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की–जैसी दिखाई मत देना।

उत्तर :

प्रसंग–प्रस्तुत पद्यांश ऋतुराज की **कन्यादान** कविता से लिया गया है। कन्यादान के अवसर पर माँ ने अपनी पुत्री को जो सीख दी, इसमें उसी का वर्णन किया गया हैं।

व्याख्या– कन्यादान करते समय माँ ने बेटी को समझाते हुए कहा कि पुत्री! ससुराल में जाकर तू अपने रूप–सौन्दर्य पर मोहित मत होना। तू अपना चेहरा पानी (दर्पण) में देखकर उस पर गर्व मत करना। भाव यह है कि तुम यह मत समझ बैठना कि तुम्हारा रूप–सौन्दर्य वहाँ सभी को जीत लेगा। जीवन की सच्चाई तो कुछ और ही है। दूसरी बात समझाती हुई माँ ने कहा कि आग पर रोटियाँ सेंकी जाती हैं, वह आग जलने–मरने के लिए नहीं होती है। यह कायरता है और आग का दुरूपयोग है। वस्त्र और आभूषणों को स्त्री के लिए शोभाकारक माना जाता है, परन्तु असल में यह भ्रम हैं। अर्थात् स्त्री अच्छे वस्त्र एवं कीमती आभूषण पहनकर अपने बारे में गलतफहमी पाल लेती है कि ससुराल वाले उसे बहुत प्यार करते है। वह इनके लालच में आ जाती है, लेकिन वास्तव में यदि देखा जाए तो वे वस्त्र एवं आभूषण स्त्री के लिए बन्धन होते हैं और वह इनमें बँधकर मोह या भ्रम से ग्रस्त हो जाती है। इससे वह अपना अस्तित्व भूल जाती है। माँ ने पुत्री को अन्तिम सीख दी कि तुम ससुराल में लड़की बनकर तो रहना, पर लड़की जैसी मत दिखना। अर्थात् कोमल आचरण तो करना, परन्तु एकदम दुर्बल, पराश्रित एवं दमनचक्र से दबी हुई अबला मत बनना, तुम सहनशीलता के साथ स्वाभिमान से रहना।

विशेष–

1. इसमें नवविवाहिता की कोमलता का संकेत किया गया है तथा उसे अबला न रहकर सबला और स्वाभिमानी बनकर रहने की सीख दी हैं।
2. ससुराल में अच्छे वस्त्र एवं गहने पहनने को मिल जाना केवल शब्दिक भ्रम बताया गया है। इसे स्वाभिमान एवं आजादी खोने का प्रमुख कारण माना गया हैं।

3. सरल तथा लोकानुभव शब्दावली का प्रयोग हुआ हैं। उपमा अलंकार एवं मुक्त छन्द की गति–यति उचित हैं।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

ऐसा लगता है कि किसी जिज्ञासु व्यक्ति ने दादू से सीधा सवाल पूछा था कि आपका खाना–पीना कैसे चलता है? आप अपने परिवार का भरण–पोषण कैसे करते हैं? अर्थात् आपकी आय के साधन क्या हैं? यहाँ तो चारों ओर अभाव ही अभाव दिखाई दे रहा है। इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए दादू ने कहा था कि राम ही मेरा रोजगार है, वहीं मेरी सम्पत्ति है, उसी राम के प्रसाद से परिवार का पोषण हो रहा है। इन पंक्तियों से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि यहाँ ऐश्वर्य का बोलबाला नहीं, गरीबी का साम्राज्य है।

उत्तर :

संदर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित **लोक संत दादू दयाल** नामक पाठ से लिया गया है। इस गद्यांश में लेखक रामबक्ष संत दादू दयाल के पारिवारिक जीवन की अभावग्रस्तता और दादू के संतोषी स्वभाव का परिचय करा रहे हैं।

व्याख्या– संत दादू की रचनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि किसी जानने के इच्छुक व्यक्ति ने दादू से उनकी पारिवारिक स्थिति के बारे में जानने के लिए उनसे सीधे–सीधे पूछ लिया होगा। उसने जानना चाहा होगा कि उनके परिवार की भोजन–व्यवस्था कैसे चलती थी?

इसके पीछे यह जानने की इच्छा भी रही होगी कि दादू की आय के स्रोत क्या थे? ऐसा इसलिए पूछा गया होगा कि दादू की पारिवारिक स्थिति निर्धनता से पूर्ण थी। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए दादू ने कहा था कि राम (ईश्वर) ही उनका रोजगार था और वही उनकी संपत्ति भी थी। उनका स्पष्ट कहना था कि राम की कृपा से ही उनके परिवार का पालन–पोषण होता था। दादू का यह उत्तर बताता है कि उनके घर पर धन–वैभव का दिखावा नाममात्र को भी नहीं था। निर्धनता में ही उनके दिन व्यतीत हो रहे थे।

विशेष–

1. लेखक ने दादू के संतोषी स्वभाव का परिचय कराया है।
2. दादू स्पष्ट वक्ता थे, यह भी इस गद्यांश से ज्ञात होता हैं।
3. दादू का रामकृपा पर अखण्ड विश्वास था और अपनी निर्धनता पर उनको किसी प्रकार का असंतोष नहीं था।
4. मिश्रित शब्दावली युक्त भाषा का प्रयोग हुआ हैं।
5. शैली परिचयात्मक हैं।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

दादू इतने शांत स्वभाव के थे कि किसी विवाद में उलझे ही नहीं। निंदा–स्तुति को उन्होंने समभाव से ग्रहण कर लिया था। उनके शिष्य हिन्दू और मुसलमान दोनों थे।

उन्होंने अपने आचरण और उपदेशों द्वारा पूरी मानवता के लिए एक समान पथ का आविष्कार किया। उन्होंने अपने विरोधियों से बहस कम की और समर्थकों को सलाह ज्यादा दी हैं।

उत्तर :

संदर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक में लेखक श्री रामबक्ष द्वारा रचित **लोक संत दादू दयाल** पाठ से लिया गया है। लेखक इस गद्यांश में संत दादू दयाल के सहनशील स्वभाव का परिचय करा रहा हैं।

व्याख्या– लेखक कहता है कि दादू शांतिप्रिय संत थे। उन्होंने कभी किसी से अपने विचारों को लेकर बहस नहीं की। चाहे किसी ने उनकी बुराई की चाहे उनकी प्रशंसा की। उन्होंने दोनों को समान भाव से स्वीकार किया। उनके शिष्य हिन्दू भी थे और मुसलमान थी। दादू ने अपने जीवन और उपदेशों द्वारा बिना किसी भेद–भाव के मुनष्य मात्र के लिए कल्याण का मार्ग दिखाया है। वह कबीर की भाँति अपने मत का विरोध करने वालों से बहस करने में रूचि नहीं रखते थे। अपने अनुयायियों को उचित मार्ग दिखाने में ही अधिक रूचि लेते थे। इसी कारण वह आज एक लोकप्रिय संत बने हुए हैं।

विशेष–

1. लेखक ने बताया है कि दादू विवादों से दूर रहने वाले शांतिप्रिय संत थे।
2. निंदा, प्रशंसा, हिन्दू, मुसलमान जैसे भेदों से दूर रहने वाले संत दादू वास्तव में सच्चे संतों की श्रेणी में आते है।
3. गंद्याश की भाषा सरल व सुबोध हैं।
4. परिचयात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

17. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना कहाँ तक उचित है? समझाइये। 6

उत्तर :

कन्या के साथ दान शब्द का प्रयोग हमारी दृष्टि में उचित नहीं हैं। दान किसी वस्तु का किया जाता है, व्यक्ति का नहीं। दान करने के बाद दानकर्ता का उस पर से अधिकार समाप्त हो जाता हैं। विवाह की परम्परा के अनुसार कन्या उसके वर को दान की जाती है, किन्तु कन्यादान का अर्थ यह नहीं है कि कन्या पर उसके माता–पिता का अधिकार समाप्त हो जाता है और वह उस पर अत्याचार कर सकता है। भारतीय समाज पुरूष–प्रधान है, इसमें पुरूषों को श्रेष्ठ और सर्वाच्च माना जाता है। विवाह के बाद लड़की ही लड़के के साथ रहने के लिए ससुराल जाती है। हमारे विचार से यह परम्परा गलत है। वर्तमान में लड़के या लड़की में कोई अन्तर नहीं हैं। दोनों की शिक्षा बराबर होती है, दोनों एक समान काम करते हैं, बराबर कमाते हैं तो फिर कन्या के दान की बात ही क्यों। हमारे विचार से ऐसा कहना या करना पूरी तरह से अनुचित हैं।

हमारे समाज में दान की बड़ी महिमा है। दान वही श्रेष्ठ माना जाता है जो योग्य, मूल्यवान और विशेष हो। दान हमेशा योग्य–पात्र को दिया जाता है। माता–पिता अपनी कन्या के लिए योग्य वर की खोज करके उसके हाथों में उसे सौंपते हैं। ऐसा दानदाता और दान प्राप्तकर्ता दोनों धन्य हो जाते हैं। इसलिए हमारे देश में कन्यादान करना सर्वोत्तम दान माना जाता है।

अथवा

17. लड़की की विदाई के क्षण माँ के लिए ही विशेषतः अधिक दुःखद क्यों होती हैं? **कन्यादान** कविता के आलोक में उत्तर दीजिए।

उत्तर :

लड़की की विदाई के क्षण माँ के लिए बहुत ही दुःखद और संवेदनापूर्ण होते हैं। लड़की को विदा करते समय माँ के हृदय की पीड़ा आँसुओं के रूप में प्रवाहित हो उठती है। वह उसके सुखद भविष्य की चिन्ता में

प्रतिपल व्यक्त होती हैं। उसके मन में अनेक प्रकार की शंकाएँ उत्पन्न होती है। पता नहीं पति और उसके परिवार वालों का उसके साथ कैसा व्यवहार होगा, वह उस नये वातावरण में सामंजस्य बना पाएगी अथवा नहीं। यदि उसे वहाँ प्रताड़ित किया गया तो, वह उसका प्रतिकार कर पाएगी अथवा नहीं। इन सब प्रश्नों के समाधान हेतु एक माँ विदाई के समय परम्परागत आदर्श से हटकर उसे यही सीख दे रही है कि अपने रूप–सौन्दर्य पर गर्व मत करना, नहीं तो तेरे सौन्दर्य की अग्नि तुझे जला देगी। आभूषणों और वस्त्रों के प्रति भी बहुत मुग्ध मत रखना। यदि तू ऐसा कर पाएगी तो तेरा जीवन सुखी रहेगा।

18. लेखक द्वारा किये गये सूर्यास्त के चित्रण को अपने शब्दों में लिखिए। 6

उत्तर :

कन्याकुमारी के सूर्यास्त का चित्रण लेखक ने बहुत ही रोचकता के साथ किया है। इस दृश्य को देखने के लिए लेखक का मन उत्साहित हो रहा था, इसलिये वह टीलों को पार करता हुआ सागर के पास एक टीले पर बैठकर सूर्यास्त को देखने लगा।

सूर्य अस्त हाने की स्थिति में पानी की सतह के पास पहुँच गया था। उसकी सुनहरी किरणों ने रेत को एक नया आकर्षक रूप प्रदान कर दिया था। इसके बाद सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। इसके स्पर्श से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो पानी पर दूर तक सोना ही सोना फैल गया हो। लेकिन सूर्यास्त काल में वह रंग इतनी जल्दी–जल्दी परिवर्तित हो रहा था कि किसी भी एक पल के लिये उसे एक नाम दे पाना असंभव नहीं था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी से पानी के लावे में डूबता जा रहा था। अब वहाँ रक्त जैसा बहता नजर आने लगा था। कुछ क्षण बीतने पर वह रक्त भी धीरे–धीरे बैंगनी और बैंगनी से काला पड़ गया, फिर धीरे–धीरे दृश्य–पट्ट पर स्याही फैल गयी थी। इस प्रकार सूर्य अपने विभिन्न रंगों में परिवर्तित होकर अस्त हो गया था। उस समय उसका अनाम रंग अत्यधिक आकर्षक लग रहा था।

अथवा

18. भारतीय राष्ट्रीय जीवन में कन्याकुमारी का क्या महत्व हैं? लिखिए।

उत्तर :

भारतीय राष्ट्रीय जीवन में कन्याकुमारी का अपना विशेष महत्व हैं। यह हमारे देश की दक्षिणी सीमा के अन्तिम भाग में शोभित तीर्थस्थली है। यहाँ का वातावरण रमणीय तथा मनभावन है तथा इसके निकट सागर–तट के भव्य सौन्दर्य को देखने के लिए भारतीय ही नहीं, बल्कि विदेशी पर्यटक भी वहाँ आते हैं। यहाँ का सूर्योदय जहाँ पर्यटकों के मन को आकर्षित करता है वहीं यहाँ का सूर्यास्त अपनी मनमोहक रंगीनियों को बिखेर कर पर्यटकों तथा जन–जन को अपने सौन्दर्य से अभिभूत कर प्राकृतिक दृश्यों की मनोहरता पर सोचने के लिये मजबूर कर देता हैं। सूर्योदय के समय सागर–तट पर खड़े होकर लोग अर्ध्य देने की प्रक्रिया आरम्भ करते हैं और सूर्यास्त के दृश्य को देखने के लिये लोग रेत के टीलो पर एकत्र होते हैं।

कन्याकुमारी ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टि से दर्शनीय स्थान है। इसके पास ही सागर में कुछ दूर स्थित चट्टान पर स्वामी विवेकानन्द की समाधि है, जो सभी दृष्टियों से पूज्य और दर्शनीय है। इन चट्टानों को सागर अपने जल में स्पर्श कर इनके साथ आँख–मिचौनी खेलता रहता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी कन्याकुमारी का विशेष महत्व है। यहाँ पर स्वामी विवेकानन्द का स्मारक एवं उमा की तपस्या का स्थान अत्यधिक पवित्र धरोहर माना जाता हैं।

19. दारून तरनि तरै नदी सुख पावै सब, सीरी घन छाँह चाहिबौई चित्त धर्यौ है इन पंक्तियों में ग्रीष्म ऋतु के प्रचण्ड ताप से बचने के लिए लोगों के किस आचरण का वर्ण किया गया हैं? 2

उत्तर :

ग्रीष्म ऋतु में सूर्य के प्रचण्ड ताप से बचने के लिए लोग नदी में नहाकर, तैरकर सुख पाते है और सभी के हृदय में वृक्षों की घनी शीतल छाया में बैठने अथवा विश्राम करने की इच्छा होती हैं।

20. नदियाँ किस धुन में निरन्तर निनाद करती रहती हैं? 2

उत्तर :

नदियों की कल–कल ध्वनि ईश्वर के आह्लद को व्यक्त करती है। वे ईश्वर के हँसने की लगन में निरन्तर निनाद करती हुई बहती जाती हैं।

21. पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की 2

कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की,
इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभर कर आ रही है, उसे शब्दबद्ध कीजिए।

उत्तर :

इन पंक्तियों को पढ़कर हमारे मन में एक ऐसी सरल, भोली और भावुक लड़की की छवि उभरती है, जो अपने विवाह के अस्पष्ट मधुर स्वप्नों में खोयी है। वह अल्पवयस्क है। विवाह उसके लिए एक सुन्दर समारोह है। उसके मन में अपने ससुराल के प्रति अनेक जिज्ञासायें हैं। वह जीवन के दुःखों से परिचित नहीं हैं। वह मधुर स्वप्नों में खोई रहने वाली हैं।

22. शिक्षा–सुधार की दृष्टि से आप शिक्षा–प्रणाली में मुख्य रूप से क्या परिवर्तन करना चाहेंगे? 2

उत्तर :

शिक्षा–सुधार की दृष्टि से हम चाहेंगे कि शिक्षा–प्रणाली ऐसी हो जो नर–नारी को एक समान मानकर उन्हें उनकी रूचियों के अनुसार पढ़ने का मौका दे। उसमें रोजगार के अवसर ही नहीं बल्कि; सदाचरण, स्वावलम्बन, दायित्वबोध, सामाजिकता एवं नैतिकता पर भी ध्यान दिया जाए। उसे ज्ञान–विज्ञान के प्रसार के साथ उचित साधनों से धनोपार्जन के अनुरूप बनाया जाए। इसलिए शिक्षा–पद्धति को समाज की जरूरतों के अनुरूप बनाया जाए।

23. दादू के निन्दा–स्तुति के विषय में क्या विचार थे? 2

उत्तर :

दादूदयाल ने अपने शिष्यों को निन्दा नहीं करने का उपदेश दिया। उनका कहना था कि जिसके हृदय में राम का निवास नहीं हैं, वही निन्दा करता हैं। निन्दा और स्तुति को समान भाव से अपनाना चाहिए। जो किसी से बहस में नहीं उलझता है, वह सभी को प्रिय मानता हैं। ऐसा व्यक्ति ईश्वर की स्तुति के साथ सभी लोगों की स्तुति भी करता है। इसलिए निन्दा और स्तुति को एक समान भाव से तौलकर व्यवहार करना उचित रहता है।

24. दस वर्ष से कम आयु के बच्चों को वाहन में यात्रा करते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए? 2

उत्तर :
बच्चों के साथ ये सावधानी रखनी चाहिए–

1. वाहन मे चढ़ते या उतरते समय बच्चे को सावधानी से चढ़ाना या उतारना चाहिए।
2. मोटर–बस में बच्चे को खिड़की की तरफ नहीं बैठाना चाहिए।
3. यथासम्भव किसी अन्य सदस्य को साथ लेकर चलना चाहिए, जिससे वह बच्चे को संभालने में सहयोग करता रहे।
4. बच्चे को बताना चाहिए कि वह अपने शरीर का कोई भी अंग वाहन की खिड़की से बाहर न निकाले।
5. बच्चे को वाहन की सीट के बगल में बैठाना चाहिए और सीट बैल्ट से बाँध लेना चाहिए।
6. बच्चे को वाहन की पीछे वाली सीट पर अकेले नहीं बैठाना चाहिए।

25. माँ ने लड़की को कैसा नहीं दिखने के लिए कहा हैं? 1

उत्तर :
माँ ने लड़की को लड़की–जैसी नहीं दिखाई देने के लिए कहा हैं।

26. लड़की को धुँधले प्रकाश की पाठिका क्यों कहा गया हैं? 1

उत्तर :
लड़की को अभी आगामी जीवन का कम ज्ञान था। अभी उसके सामने केवल सुखों का धुँधला प्रकाश ही था। उसे केवल जीवन के मधुर और आनन्ददायक पक्ष का ही आभास था उसके साथ जुड़े कष्टों से वह अनजान थी।

27. शराब पीकर कौन गाड़ी चला रहा था? 1

उत्तर :
शराब पीकर नरेन्द्र गाड़ी चला रहा था।

28. भारतेन्दु जी ने किन पत्रिकाओं का सम्पादन किया था? 1

उत्तर :
भारतेन्दु जी ने कविवचन सुधा और हरिशचन्द्र मैगजीन का सम्पादन किया था।

29. **तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।** कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के विषय में यह क्यों कहा हैं? 4

उत्तर :
रानी लक्ष्मीबाई वीरता और साहस की साक्षात मूर्ति थी। उसने अपने साहस और हिम्मत के बल पर अंग्रेज सेना के युद्ध में छक्के छुड़ा दिए थे। उसने लेफ्टिनेंट वॉकर जैसे कुशल अंग्रेज सेना के युद्ध में छक्के छुड़ा दिए थे। उसने स्वतन्त्रता संघर्ष के समय वीरता का जो परिचय दिया, उसका उदाहरण इतिहास में मिलना आसान नहीं। केवल तेईस वर्ष की अवस्था में उसने जो कुछ कर दिखाया, वह इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। ऐसी वीरांगना और साहसी नारी के कार्य ही उसका स्मारक है। उसने युद्ध–भूमि में जिस वीरता का सबूत दिया, उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। उसके कार्य इतिहास में सदा अमर रहेंगे। इन्हीं विशेषताओं के कारण ही कवयित्री ने यह कहा है कि तू स्वयं ही अपना स्मारक है, तेरे लिए और किसी अन्य स्मारक की आवश्यकता नहीं।

30. महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

उत्तर :
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म रायबरेली के दौलतपुर गाँव में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये स्कूली शिक्षा पूर्ण कर रेलवे में नौकरी करने लगे, किन्तु स्वाभिमान के कारण इस्तीफा देकर सन् 1903 में **सरस्वती** पत्रिका के सम्पादन से जुड़ गये। ये संस्कृत, बंगला, मराठी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। द्विवेदीजी प्रखर व्यक्तित्व एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे कवि, समालोचक, निबन्धकार, सम्पादक, भाषा वैज्ञानिक तथा इतिहासकार आदि के साथ समाज–सुधारक रूप में प्रचलीत रहे। सन् 1903 से 1920 तक **सरस्वती** पत्रिका का सम्पादन करते हुए द्विवेदीजी ने हिन्दी गद्य का परिष्कार किया, हिन्दी वर्तनी एवं व्याकरण को स्थिर किया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के विकास में इनका विशिष्ट योगदान रहा। इनका निधन सन् 1938 में हुआ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की मौलिक रचनाएँ हैं– काव्य–मंजूषा, सुमन, अबला विलाप, कविता–कलाप (काव्य); अद्भूत आलाप, सम्पत्ति शास्त्र, महिला–मोद, रसज्ञ–रंजन, साहित्य–सीकर आदि गद्य संग्रह तथा साहित्यालाप, साहित्य–सन्दर्भ एवं आलोचनांजलि (समालोचना) इनकी अनूदित रचनाएँ भी मिलती हैं।

□□□□□□□